खेतों की पुकार

चमत्कारिकाएँ

शेषेन्द्र शर्मा

अनुक्रम

कवि की ओर से	*vi*
राष्ट्रेन्दु शेषेन्द्र के हृदय की पुकार	*ix*
खेतों की पुकार	25
हल उठाओ	32
देश के घाव	36
बिन दुःख - दर्द के गीत	42
तूफान बनो	48
हर दिल में आग	57
रक्त की रोशनी	62
नक्षत्रों का गाँव	68
आँसू नहीं है दुःख के सङ्केत	73
अपने वाक्यों में दर्शन दूँगा	77
आत्मबोध और मुक्ति	83
शब्द से शताब्दी तक	85

दार्शनिक और विद्वान कवि एवं काव्य शास्त्रज्ञ

शेषेंद्र शर्मा

20 अक्तूबर 1927 – 30 मई 2007

माता पिता	:	अम्मायम्मा, जी. सुब्रह्मण्यम
भाई बहन	:	अनसूया, देवसेना, राजशेखरम
धर्मपत्नि	:	श्रीमती जानकी शर्मा
संतान	:	वसुंधरा, रेवती (पुत्रियाँ)
		वनमाली सात्यकि (पुत्र)
बी.ए	:	आन्ध्रा क्रिस्टियन कालेज गुंटूर आं.प्र.
एल.एल.बी	:	मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास
नौकरी	:	डिप्यूटी मुनिसिपल कमीशनर (37 वर्ष)
		मुनिसिपल अड्मिनिस्ट्रेशन विभाग, आं.प्र.

***

शेषेंद्र नाम से ख्यात शेषेंद्र शर्मा आधुनिक भारतीय कविता क्षेत्र में एक अनूठे शिखर हैं। आपका साहित्य कविता और काव्यशास्त्र का सर्वश्रेष्ठ संगम है। विविधता और गहराई में आपका दृष्टिकोण और आपका साहित्य भारतीय साहित्य जगत में आज तक अपरिचित है। कविता से काव्यशास्त्र तक, मंत्रशास्त्र से मार्क्सवाद तक आपकी रचनाएँ एक अनोखी प्रतिभा के साक्षी हैं। संस्कृत, तेलुगु और अंग्रेजी भाषाओं में आपकी गहन विद्वत्ता ने आपको बीसवीं सदी के तुलनात्मक साहित्य में शिखर समान साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। टी.एस. इलियट, आर्चबाल्ड मेक्लीश और शेषेन्द्र विश्व साहित्य और काव्यशास्त्र के त्रिमूर्ति हैं। अपनी चुनी हुई साहित्य विधा के प्रति आपकी निष्ठा और लेखन में विषय की गहराइयों तक पहुंचने की लगन ने शेषेंद्र को विश्व कविगण और बुद्धि जीवियों के परिवार का सदस्य बनाया है।

खेतों की पुकार

अरे सुनो, मुर्गे की बाँग
वह ऊषा द्वारा पूरब को फोड़ने की ध्वनि
दोनों हाथों से लड़ा है वह - जीवन की एक - एक चिन्दी के लिए,

तैर गया सारे समुद्र
मात्र एक रोटी के तट को पाने के लिए
सफ़र किये उसने बिना पतवार की नावों में
एक छोटी-सी आशा का छोर छूने के लिए
तुम कम समझोगे यह भूगोल है
मानव की जायदाद?

2. वह निष्कपट शिशु
जो मुट्ठियों में स्वर्गों को लेकर
उतरा है इस धरती पर
देखो, वह सो रहा है
ख़ाली पेट एक अश्रु बनकर
अय, गुलाब के कुञ्ज!
तुम्हें शर्म है तो मत गाओ
तुम्हारे गले में जो बुलबुले हैं

तूफान बनो

हल उठा लो, मेरे भाइयो,
पुस्तकें फेंक दो, मेरे देश के बच्चो
अपनी ऊषाओं को दफना कर
अपने ही देश में हमें गुलाम बनाया जिन्होंने
आओ, अब उनकी प्राणवायु चूस लें,

61. ओ पुष्प और परिन्दो, चुप रहो
अपने स्वरों को रोको मुझे अपने शस्त्र छीनने दो
जगाने दो मुझे उन मस्तिष्कों को
जो सो रहे हैं इस भयानक असह्य दुर्गन्ध में
चैन की नींद
परिणत होने दो उन्हें क्रुद्ध आँधियों में
उन्हें सिखाने दो मुझे घिन करने की कला
कितनी पवित्र वस्तु है घृणा - बताने दो उन्हें
मुझमें अग्निमुखी पर्वतों को फूटने दो!

62. जब किसी चेहरे पर एक लम्बी मुस्कान खिंची पाता हूँ
मेरा हाथ स्वतः हथगोले की ओर बढ़ जाता है

नक्षत्रों का गाँव

पत्र खोला पृष्ठों से चाँदनी बिखर गयी
वाक्य उड़ गये मैना, चकोर और तोते बन कर
बच गये मैं और धवलिमा
नक्षत्रों के गाँव से चाँदनी के झुण्ड हाँकता हुआ
आ गया चन्द्रमा

123. यह कैसी रात है कि जलाने के बाद
रोशनी के बजाय आह दे रहा है दीप?
शायद आज आकाश के खयालों में चन्द्रमा एक बूँद है आँसू का

124. कई चाँदनी रातों ने
जिन जख्मों को बनाया
मेरा विश्वास है कि
ठीक कर सकता है कि उन्हें
एक टुकड़ा चन्द्रमा का
इसलिए मुझे डर है कि इन बढ़ती हुई आँधियों में
वह चन्द्रमा कहीं गगन से उड़ न जाये।

अपने वाक्यों में दर्शन दूँगा

धूप जैसी मेरी कल्पना
शब्छ पर पड़ी
सुदीर्घ उसकी छाया शताब्दी पर पड़ी
सूरज खेल रहा था सुबह खिले फूलों के साथ
वीर को देखकर काल भयभीत हो गया

150. यह भाषा यह काल यह देश
कैसे कहूँ कि मेरे हैं
मैंने इन्हें चुना नहीं है
न किसी ने ली है इसके लिए मेरी स्वीकृति
मैं बन्दी हूँ उनका बिना किसी कारण

151. जिस शब्द पर मैं
तराश रहा हूँ अपना सचेतन शिल्प
वह दुर्ग है जिसे निर्मित कर रहा हूँ मैं
अपने आपको मृत्यु से बचाने के लिए
और पुस्तक एक बाँध है जिसे बना रहा हूँ
मनुष्य की पाशविकता को रोकने के लिए

End of Preview.

Rest of the book can be read @
http://kinige.com/book/Kheton+Ki+Pukar

* * *